

आय का चक्रीय प्रवाह: अर्थ, चरण, प्रकार और महत्व

Dr. Meena Prasad

- वृहद अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्थाओं के केंद्रीय प्रश्नों का अध्ययन करने का प्रयास करता है। इन प्रश्नों में से प्रमुख प्रश्न यह है कि अर्थव्यवस्थाएँ धन का सृजन कैसे करती हैं। किसी अर्थव्यवस्था में, उत्पादन के सभी कारक (FoP) एक उत्पादन प्रवाह/चक्र से गुजरते हैं; इस प्रक्रिया में, उत्पादन के कारकों को भुगतान के रूप में धन का सृजन होता है, जिसे कारक भुगतान कहा जाता है। इस प्रकार, राष्ट्रों की आर्थिक समृद्धि इस प्रवाह को उत्पन्न करके और वस्तुओं (वस्तुओं और सेवाओं) का उत्पादन करके सृजित होती है, जिनका उपभोग उपभोक्ता अपनी आय को इन वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च करके करते हैं।

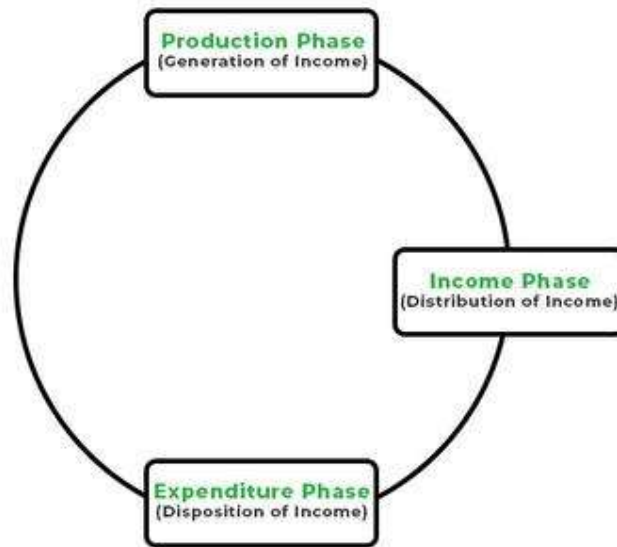
आय का चक्रीय प्रवाह

आय का चक्रीय प्रवाह एक आर्थिक मॉडल है जो यह दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में धन या आय का प्रवाह कैसे होता है। एक सरल अर्थव्यवस्था में केवल दो क्षेत्र होते हैं, अर्थात् परिवार और फर्म। परिवार वस्तुओं और सेवाओं के उपभोक्ता होते हैं और उत्पादन के कारकों (भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यम) के स्वामी होते हैं। वहीं, फर्म क्षेत्र वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करता है और उन्हें परिवारों को बेचता है।

आय के चक्रीय प्रवाह (दो-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था) में, दो पक्षों, अर्थात् फर्मों और परिवारों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान होता है, जिससे अर्थव्यवस्था में धन का एक निश्चित प्रवाह होता है। परिवार फर्मों को उत्पादन के कारक प्रदान करते हैं, जैसे कि भूमि (प्राकृतिक संसाधन), श्रम, पूंजी और उद्यम, जो वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करते हैं, और उपभोक्ता इन वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग पर अपनी आय खर्च करते हैं। फर्म परिवारों को किराया, मजदूरी, ब्याज और लाभ के रूप में कारक भुगतान करती हैं। फर्मों और परिवारों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का यह प्रवाह और कारक भुगतान अर्थव्यवस्था में धन के चक्रीय प्रवाह को दर्शाता है।

आय के चक्रीय प्रवाह के चरण

आय के चक्रीय प्रवाह में तीन अलग-अलग चरण होते हैं: सृजन, वितरण और निपटान।



1. उत्पादन चरण

आय के चक्रीय प्रवाह का पहला चरण उत्पादन चरण है। इस चरण में, फर्म कारक सेवाओं की सहायता से वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करती हैं।

2. वितरण चरण

आय के चक्रीय प्रवाह का दूसरा चरण वितरण चरण है। इस चरण में, मजदूरी, किराया, ब्याज और लाभ जैसी कारक आय फर्मों से परिवारों तक प्रवाहित होती है।

3. निपटान चरण

आय के चक्रीय प्रवाह का अंतिम चरण निपटान चरण कहलाता है। इस चरण में, उत्पादन के कारकों द्वारा प्राप्त आय को फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च किया जाता है।

अतः, आय के चक्रीय प्रवाह के विभिन्न चरणों के माध्यम से, किसी अर्थव्यवस्था की उत्पादन इकाइयों में उत्पन्न आय वापस उत्पादन इकाइयों तक पहुँचती है और चक्रीय प्रवाह को पूरा करती है।

वृत्ताकार प्रवाह के प्रकार

चक्रीय प्रवाह के दो प्रकार हैं: वास्तविक प्रवाह और धन प्रवाह।

1. वास्तविक प्रवाह

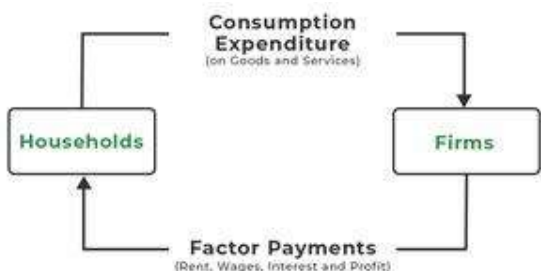
किसी अर्थव्यवस्था में परिवारों से फर्मों तक कारक सेवाओं का प्रवाह और फर्मों से परिवारों तक वस्तुओं का संबंधित प्रवाह वास्तविक प्रवाह कहलाता है। वास्तविक प्रवाह को भौतिक प्रवाह भी कहते हैं। इस प्रकार के चक्रीय प्रवाह में धन का कोई लेन-देन नहीं होता और अर्थव्यवस्था के दो क्षेत्रों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान होता है। यह प्रवाह अर्थव्यवस्था को उसकी विकास प्रक्रिया की गति निर्धारित करने में सहायक होता है। उदाहरण के लिए, यदि फर्मों को अधिक कारक सेवाएं प्रदान की जाती हैं, तो वे अधिक मात्रा में उत्पादन करेंगी, जिससे अंततः आर्थिक विकास की प्रक्रिया में तेजी आएगी।



उपरोक्त आरेख दर्शाता है कि परिवार फर्म को कारक सेवाएं प्रदान करते हैं, और उनकी उत्पादक सेवाओं के पुरस्कार के रूप में, फर्म परिवार को वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करती हैं।

2. धन प्रवाह

कंपनियों द्वारा परिवारों को उनकी कारक सेवाओं के लिए किए जाने वाले कारक भुगतानों का प्रवाह और परिवारों द्वारा कंपनियों को कंपनियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की खरीद के लिए किए जाने वाले उपभोग व्यय का प्रवाह, मुद्रा प्रवाह कहलाता है। मुद्रा प्रवाह को नाममात्र प्रवाह भी कहा जाता है। इस प्रकार के चक्रीय प्रवाह में दो क्षेत्रों, अर्थात् परिवारों और कंपनियों के बीच मुद्रा का आदान-प्रदान शामिल होता है।



उपरोक्त आरेख दर्शाता है कि परिवारों द्वारा प्रदान की जाने वाली कारक सेवाओं के बदले में, फर्मे उन्हें कारक भुगतान करती हैं, और फिर परिवार इन फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की खरीद पर अपनी आय खर्च करते हैं।

आय के चक्रीय प्रवाह का महत्व

1. विभिन्न क्षेत्रों के बीच पारस्परिक निर्भरता को समझने में सहायक।

अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में घरेलू क्षेत्र, सरकारी क्षेत्र, उत्पादक क्षेत्र और विदेशी क्षेत्र शामिल हैं। अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह इन क्षेत्रों के बीच आपसी निर्भरता को समझने में सहायक होता है। दूसरे शब्दों में, यह दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था के ये क्षेत्र एक दूसरे के पूरक हैं, जिससे देश की आर्थिक गतिविधि सुचारू रूप से चलती रहती है।

2. राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने में सहायक

चक्रीय प्रवाह आय के तीन चरणों को दर्शाता है: सृजन चरण, वितरण चरण और निपटान चरण। इन चरणों के अंतर्गत किसी अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पन्न आय को तीन अलग-अलग तरीकों से निर्धारित किया जा सकता है, अर्थात् उत्पादन विधि, आय विधि और व्यय विधि।

3. यह अर्थव्यवस्था की संतुलन स्थिति को दर्शाता है।

अर्थव्यवस्था के चक्रीय प्रवाह में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी असंतुलन उत्पन्न कर सकती है, जिससे उसके कामकाज पर प्रभाव पड़ता है। अतः, अर्थव्यवस्था की आय का चक्रीय प्रवाह उसकी संतुलन स्थिति को दर्शाता है।

4. विभिन्न प्रकार के रिसावों और इंजेक्शनों की पहचान करने में सहायक।

किसी अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह अर्थव्यवस्था में होने वाले रिसाव और निवेश की पहचान करने में भी सहायक होता है।

लीकेज का अर्थ है अर्थव्यवस्था के चक्रीय प्रवाह से धन का निकलना। अर्थव्यवस्था के आय चक्रीय प्रवाह से लीकेज तब होता है जब फर्मे और परिवार अपनी आय का एक हिस्सा बचाते हैं। इसलिए, लीकेज या निकासी अर्थव्यवस्था की आय का वह हिस्सा है जो आय चक्रीय प्रवाह से होकर नहीं गुजरता, जिसके परिणामस्वरूप हाल ही में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च करने के लिए वह धन

अनुपलब्ध हो जाता है। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि लीकेज अर्थव्यवस्था में आय के प्रवाह को कम करता है।

आय में वृद्धि का अर्थ है अर्थव्यवस्था के चक्रीय प्रवाह में आय का जुड़ना या प्रवेश होना। आय के चक्रीय प्रवाह में यह वृद्धि परिवारों और फर्मों द्वारा विभिन्न बाहरी स्रोतों, जैसे वित्तीय संस्थानों से लिए गए ऋण का परिणाम है। हालांकि, इस अतिरिक्त आय से तत्काल कोई व्यय नहीं होता है। इसलिए, आय में वृद्धि अर्थव्यवस्था में आय के प्रवाह को बढ़ाती है।